भगत कबीर – सबद ३७

आपे पावकु आपे पवना ॥

रागु गउड़ी, भगत कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब, ३२९

आपे पावकु आपे पवना ॥
जारै खसमु त राखै कवना ॥१॥
राम जपत तनु जरि की न जाइ ॥
राम नाम चितु रहिआ समाइ ॥१॥ रहाउ ॥
का को जरै काहि होइ हानि ॥
नट वट खेलै सारिगपानि ॥२॥
कहु कबीर अखर दुइ भाखि ॥
होइगा खसमु त लेइगा राखि ॥३॥३३॥

सार: प्रकृति के शाश्वत नियमों पर विश्वास, मन में स्थिरता विकसित करता है जो जीवन के उतार-चढ़ाव में भी डगमगाती नहीं है। यह स्वीकार करता है कि परिवर्तन, परिणाम, विकास और पतन मानवीय अनुभव का महत्त्वपूर्ण हिस्सा हैं और कोई भी बाहरी स्थिति स्थायी नहीं होती। जो मन इस गहरी समझ से जुड़ता है, वह सफलता में विनम्र और मुश्किल समय में दृढ़ बना रहता है, वह इन दोनों स्थितियों को अपनी वास्तविक मूल्य या पहचान का मापदंड मानने के बजाय, बस गुज़रते हुए पल के तौर पर देखता है। उदाहरण के लिए, जब कोई महत्वपूर्ण अवसर हाथ से निकल जाता है तब यह भरोसा निराशा से बचाता है और मन को धैर्य, स्पष्टता और नए उद्देश्य के साथ आगे बढ़ने की शक्ति देता है। ऐसे में स्थिरता जीवन को नियंत्रित करने से नहीं बल्कि उस व्यापक व्यवस्था पर भरोसा करने से आती है जिसके भीतर जीवन लगातार आगे बढ़ता है।

आपे पावकु आपे पवना ॥

वही स्वयं आग है और वही हवा है। यह उस एकत्व की ओर संकेत करता है जो दिखाई देने वाली समस्त विभिन्नताओं के भीतर विद्यमान है जहाँ जीवन को बनाने, बनाए रखने और समाप्त करने वाले तत्व उसी अनंत स्रोत से निकलते हैं।

जारै खसमु त राखै कवना ॥१॥

अगर सत्ताधारी वास्तविकता ही इसका अंत कर दे तब इसको कौन बचा सकता है। यह ब्रह्मांड के नियमों के मूलभूत का विरोध करने के व्यर्थ प्रयास को दर्शाता है, चाहे वह जीवन के किसी विशेष चरण के अंत से संबंधित हो या भौतिक शरीर के अंत से। (१)

राम जपत तनु जरि की न जाइ ॥

सार्वभौमिक सत्य के गहन चिंतन में डूबे रहने पर, भौतिक शरीर के अंत का कोई महत्त्व नहीं रह जाता। यह अस्तित्व के नियमों पर टिकी उस आंतरिक दृढ़ता को दर्शाता है जो जीवन के अनिवार्य बदलावों से विचलित नहीं होती।

राम नाम चितु रहिआ समाइ ॥१॥ रहाउ ॥

अंतर्मन उस सर्वव्यापी सत्ता के चिंतन में लीन रहता है। यह अवस्था ऐसे मन को दर्शाती है जो अब केवल सार्वभौमिक सत्य के बारे में सोच नहीं रहा बल्कि उसमें पूरी तरह डूब गया है। (१)(विराम)

का को जरै काहि होइ हानि ॥

वास्तविकता में क्या जलता है और किसे हानि होती है। यह बताता है कि नुक़सान का भाव अहं के सीमित दृष्टिकोण से पैदा होता है जबकि कृतज्ञता का भाव विघटन को अस्तित्व के प्रवाह में एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन के रूप में देखता है।

नट वट खेलै सारिगपानि ॥२॥

सबको सहारा देने वाली सर्वव्यापी सत्ता, जो एक कुशल कलाकार की तरह है, कई तरह की लीलाएँ करती है। यह बताता है कि पूरा ब्रह्मांड एक ही मूल सत्य की गतिशील अभिव्यक्ति के रूप में सामने आता है, ठीक वैसे ही जैसे कोई कुशल अभिनेता अनगिनत भूमिकाएँ निभाता है लेकिन कभी भी अपने असली स्वरूप को नहीं खोता। (२)

कहु कबीर अखर दुइ भाखि ॥

कबीर कहते हैं, उन दो अक्षरों का उच्चारण करो। यह प्रेरित करता है कि मनुष्य अपने सभी विचारों, शब्दों और कामों को अहं-भरे द्वैत के बजाय सर्वव्यापी एकता के मूल भाव से उत्पन्न होने दे।

होइगा खसमु त लेइगा राखि ॥३॥३३॥

यदि सार्वभौमिक सिद्धांत जीवन में साकार हो जाए, तो वही संरक्षण प्रदान करेगा। प्रकृति के नियमों में यह भरोसा स्थिरता लाता है जो लाभ या हानि से विचलित नहीं होने देता। (३)(३३)

तत्त्व: भगत कबीर आत्म-ज्ञान के सबसे सरल मार्ग का वर्णन करते हैं जिसमें सभी विचारों, शब्दों और कार्यों को अहं से भरे द्वैत के बजाय सर्वव्यापी एकता के मूल भाव से उत्पन्न होने दिया जाता है। यह दृष्टिकोण पूरे अस्तित्व को जागरूकता की स्थिति में ले आता है। जिस तरह एक अभिनेता किसी भी एक किरदार तक सीमित नहीं रहता, उसी तरह मूल वास्तविकता उन रूपों तक सीमित नहीं होती जिनके माध्यम से वह दिखाई देती है। वह अपनी स्वाभाविक पवित्रता को खोए बिना अनगिनत भूमिकाएँ निभाती है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com